Contents

## :: अनुक्रमणिका ::


प्राक्कथन : [क-थ]

अनुक्रम : [त - द]

**प्रथम अध्याय : विषय-प्रवेश : [001-070]**

प्रास्ताविक — आधुनिक काल में हिन्दी कहानी के विकास के विभिन्न कारक — कहानी का स्वबंध — हिन्दी कहानी : उद्भव और विकास — प्रेमचन्द युगीन हिन्दी कहानी — प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी— स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी — समकालीन कहानी — उत्तर आधुनिकतावादी कहानी — युगीन परिवेश — लेखक के शैशवकालीन प्रभाव — शैलेश मटियानीजी का जीवन-संघर्ष — मटियानीजी की कुछ अवधारणाएं — लेखक की नारी-विषयक अवधारणा — कहानीकार मटियानी — निष्कर्ष — सन्दर्भानुक्रम ।

**द्वितीय अध्याय : श्री शैलेश मटियानी का कथासाहित्य नारी चित्रण के विशेष परिप्रेक्ष्य में [071 - 156]**

प्रास्ताविक — मटियानीजी की कहानियां — मटियानी जी के कहानी-संग्रह — पहाड़ी परिवेश की कहानियां — पोस्टमैन — वह तू ही था — ~~अ~~ आन-बान — लीक — अंधेरे की जात — लोकदेवता — बर्फ की चट्टानें चिट्ठी के चार अक्षर — उसने तो नहीं कहा था — सीने में धंसी आवाज़ — दशरथ — सतजुगिया आदमी —

घर-गृहस्थी — कुसुमी — नंगा — सावित्री — कालिका
अवतार — अंतिम तृष्णा — पीरबम्भा — आकाश कितना
अनंत है — पुरवा — काला कौआ — नेताजी की घुटिया
झुरमुट — एक शब्दहीन नदी — खरबूजा — बित्ता भर सु
जिबुका — संस्कार — भस्मासुर — रुका हुआ रास्ता —
चुनाव — पापमुक्ति — माटी — पुरोहित — प्रेतमुक्ति-
सुहागिनी-असमर्थ-घुघुतिया त्योहार - इतिहास - अर्द्धांगिन
(ब) नगरीय परिवेश की कहानियाँ : छाक, हलाल, मिसेज
ग्रीनवुड, कविता, दो दुखों का एक सुख, रहमतुल्ला, आकाश
कितना अनंत है, गोधुली, मफ़रन, चील, मैमूद, प्यास, झब्बू
मलंग, भय, मिट्टी, भविष्य, भावना की सत्ता, इब्नेस्वामी,
जिसकी जरूरत नहीं थी, किसी से न कहना, चिथड़े, प्रेरणा
की पूंजी, शुक बोला, आदि और अन्त, दैट माय फादर बालज
बिट्ठल, "एक कोप था : दो शारी बिस्किट", फर्क बस
इतना है, हमपेशा, पत्थर, बत्तीस दांतों को टकराने वाला
सेब, कीर्तन की धुन, महाभोज, अहिंसा, सफर पर जाने से
पहले, — अन्य कहानियाँ — निष्कर्ष — सन्दर्भानुक्रम ।

तृतीय अध्याय : शैलेश मटियानी की ग्राम्य-परिवेश की कहानियों
में नारी के विविध रूप : (157-218)

प्रास्ताविक — फौजी पत्नियां — फौजी माताएं —
थोकदारीनियां — ठकुराइनें — पधानियां — नौलियां -
सपत्नियाँ — महतारियाँ — सास — बहुएं — भौजियां —
बहनें — नारी-वंचना से ग्रसित स्त्रियां — महिमामयी
नारियां — पतले पेटवाली नारियां — उच्चवर्ग की
नारियां — कामकाजी महिलाएं — दलित वर्ग की
नारियां — निष्कर्ष — सन्दर्भानुक्रम ।

चतुर्थ अध्याय : शैलेश मटियानी की नगरीय परिवेश की कहानियों में
नारी के विविध रूप : [ 219- 277 ]

प्रास्ताविक — पारसी महिलाएं — गुजराती लेडानियां — मराठी बाटनें — दक्खनी महिलाएं — मुसलमान महिलाएं — ईसाई महिलाएँ — भिखारिनें — वेश्याएं — रक्षिताएं — भिरातीनें — उच्चवर्ग की महिलाएं — दलितवर्ग की महिलाएं — अन्य नारी-चरित्र — निष्कर्ष - सन्दर्भानुक्रम ।

पंचम अध्याय : मटियानीजी की कहानियों में चित्रित विशिष्ट नारी-चरित्र : [ 278-336 ]

प्रास्ताविक — लगभग 29-30 विशिष्ट नारी-चरित्र — अन्य नारी-पात्र — निष्कर्ष — सन्दर्भानुक्रम ।

षष्ठ अध्याय : उपसंहार [ 337-350 ]

समग्रावलोकन पर आधारित कतिपय निष्कर्ष — विषय का महत्त्व — उपलब्धियां — संभावनाएं ।

सन्दर्भिका : [351-358 ]

[1] परिशिष्ट - [क] : उपजीव्य ग्रन्थों की सूची
[2] परिशिष्ट - [ख] : सहायक ग्रन्थों की सूची-हिन्दी
[3] परिशिष्ट- [ग] : सहायक ग्रन्थों की सूची- अंग्रेजी
[4] परिशिष्ट -[घ] : पत्र-पत्रिकाएं

xxxxxxxxxxxxxxxxxx